



SHIVANSH Nayak

21 Oct 2025

03:30 PM

Gorakhpur

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121549801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 21/10/2025
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 15:30:00 घंटे
इष्ट _____: 23:46:20 घटी
स्थान _____: Gorakhpur
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:45:00 उत्तर
रेखांश _____: 83:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:03:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:33:32 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:25 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:33:57 घंटे
सूर्योदय _____: 05:59:27 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:22:30 घंटे
दिनमान _____: 11:23:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 04:02:47 तुला
लग्न के अंश _____: 26:43:16 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: चित्रा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: नाग
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: रा-राकेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	आश्विन	29
पंजाबी	संवत : 2082	कार्तिक	5
बंगाली	सन् : 1432	कार्तिक	4
तमिल	संवत : 2082	आइपसी	5
केरल	कोल्लम : 1201	तुलम	4
नेपाली	संवत : 2082	कार्तिक	5
चैत्रादि	संवत : 2082	कार्तिक	कृष्ण 15
कार्तिकादि	संवत : 2082	आश्विन	कृष्ण 15

पंचांग

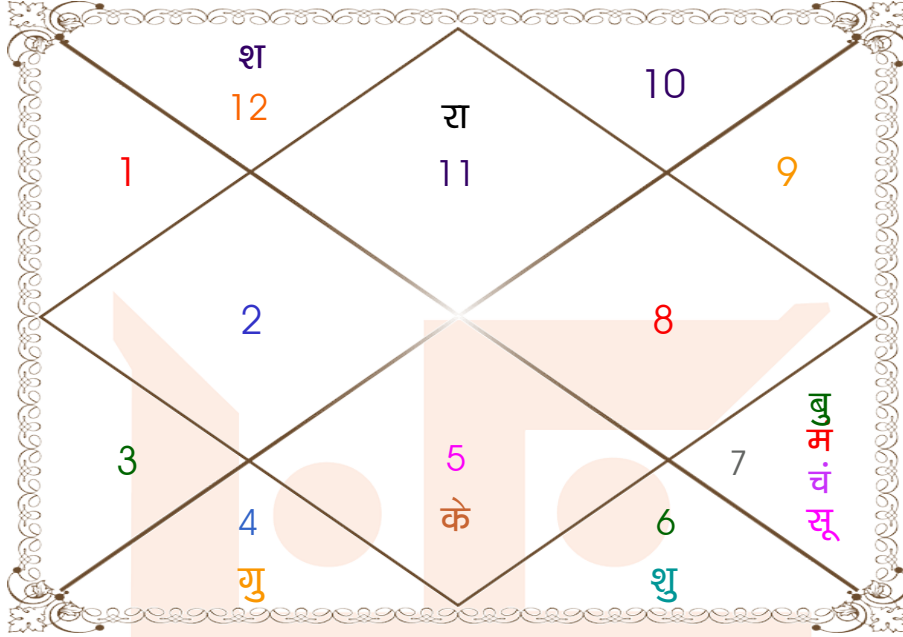
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:54:52
जन्म तिथि _____ : 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 22:58:38 घंटे
जन्म योग _____ : चित्रा
सूर्योदय कालीन योग _____ : विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल _____ : 27:15:58 घंटे
जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण _____ : नाग
करण समाप्ति काल _____ : 17:54:52 घंटे
जन्म करण _____ : नाग
भयात _____ : 48:03:25
भभोग _____ : 66:44:59
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 1 वर्ष 11 मा 13 दि

घात चक्र

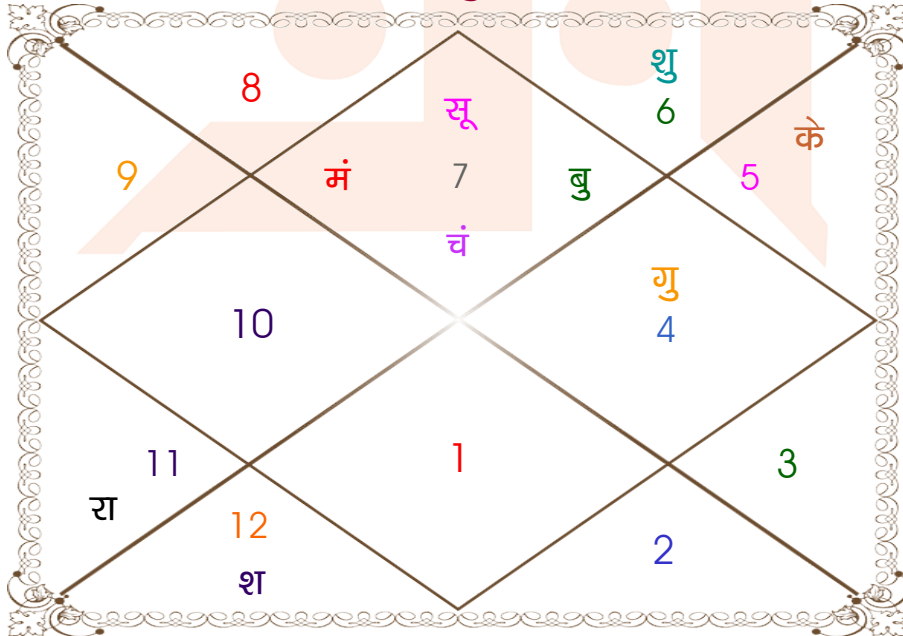
मास _____ : माघ
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : शतभिषा
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : कन्या
सूर्य _____ : कन्या
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : तुला
बुध _____ : कर्क
गुरु _____ : वृश्चिक
शुक्र _____ : धनु
शनि _____ : सिंह
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श			
रा			गु
ल			के
		च म,सू बु	शु

लग्न कुंडली

		श	
		रा	ल
गु			
के	मं	बु	
शु	सू	चं	

विंशोत्तरी
मंगल 1वर्ष 11मा 13दि
मंगल

21/10/2025

05/10/2140

मंगल	05/10/2027
राहु	05/10/2045
गुरु	05/10/2061
शनि	04/10/2080
बुध	05/10/2097
केतु	05/10/2104
शुक्र	05/10/2124
सूर्य	06/10/2130
चन्द्र	05/10/2140

योगिनी

मंगला 0वर्ष 3मा 10दि
पिंगला

31/01/2026

01/02/2028

पिंगला	13/03/2026
धान्या	13/05/2026
भामरी	02/08/2026
भद्रिका	11/11/2026
उल्का	13/03/2027
सिद्धा	02/08/2027
संकटा	11/01/2028
मंगला	01/02/2028

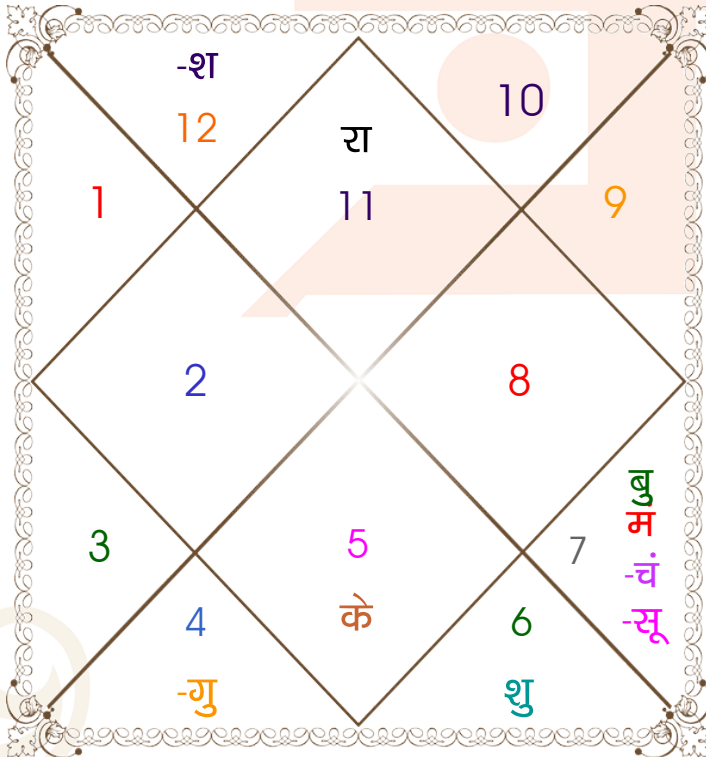
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	26:43:16	500:16:15	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
सूर्य			तुला	04:02:47	00:59:41	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			तुला	02:56:36	11:57:48	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	सम राशि
मंगल			तुला	25:45:45	00:42:08	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	सम राशि
बुध			तुला	26:25:35	01:16:35	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	मित्र राशि
गुरु			कर्क	00:12:08	00:04:03	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	उच्च राशि
शुक्र			कन्या	15:08:28	01:14:43	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	नीच राशि
शनि	व		मीन	02:08:07	00:03:34	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	23:36:30	00:06:01	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	23:36:30	00:06:01	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	06:26:19	00:02:00	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मीन	05:48:18	00:01:25	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	07:09:40	00:00:13	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			वृश्चि	29:48:14	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	शनि	--

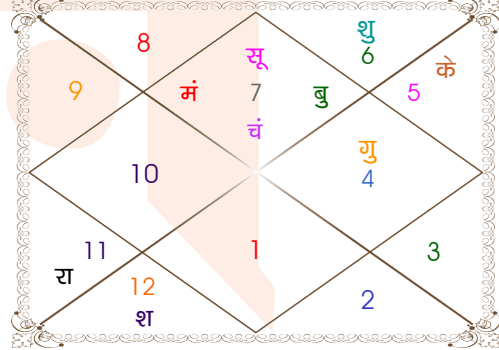
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:06

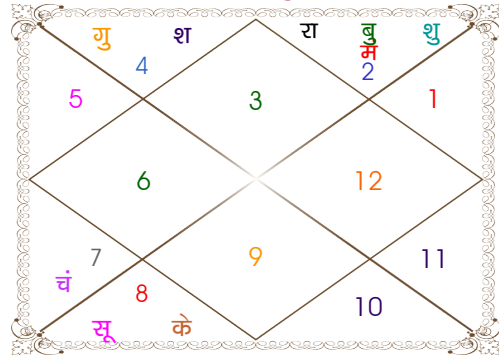
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 12:14:06	कुम्भ 26:43:16
2	मीन 12:14:06	मीन 27:44:55
3	मेष 13:15:45	मेष 28:46:35
4	वृष 14:17:24	वृष 29:48:14
5	मिथुन 14:17:24	मिथुन 28:46:35
6	कर्क 13:15:45	कर्क 27:44:55
7	सिंह 12:14:06	सिंह 26:43:16
8	कन्या 12:14:06	कन्या 27:44:55
9	तुला 13:15:45	तुला 28:46:35
10	वृश्चिक 14:17:24	वृश्चिक 29:48:14
11	धनु 14:17:24	धनु 28:46:35
12	मकर 13:15:45	मकर 27:44:55

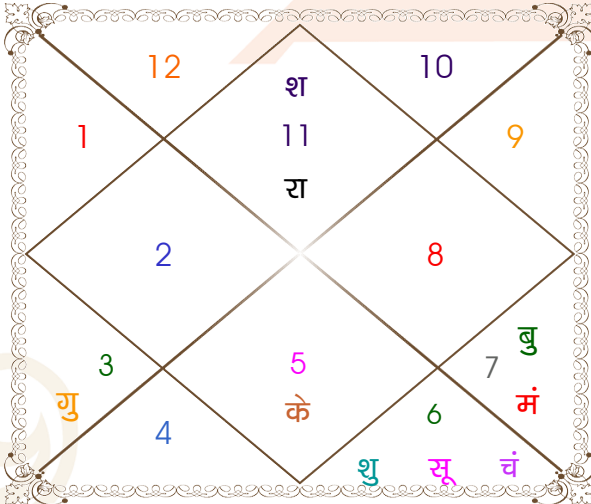
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	26:43:16
2	मेष	05:10:13
3	वृष	05:00:13
4	वृष	29:48:14
5	मिथुन	23:48:22
6	कर्क	21:11:19
7	सिंह	26:43:16
8	तुला	05:10:13
9	वृश्चिक	05:00:13
10	वृश्चिक	29:48:14
11	धनु	23:48:22
12	मकर	21:11:19

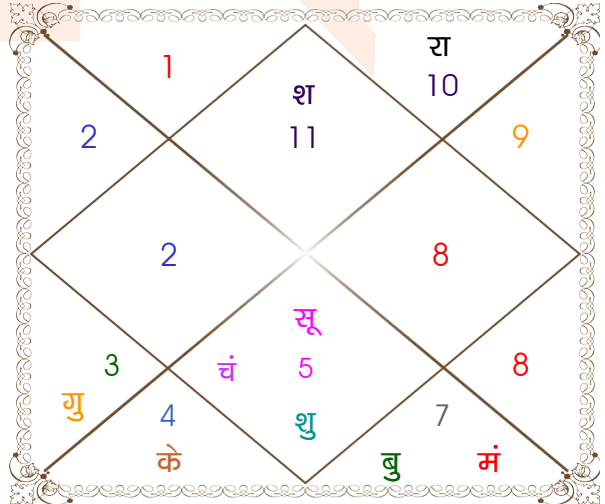
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



भाव कुंडली



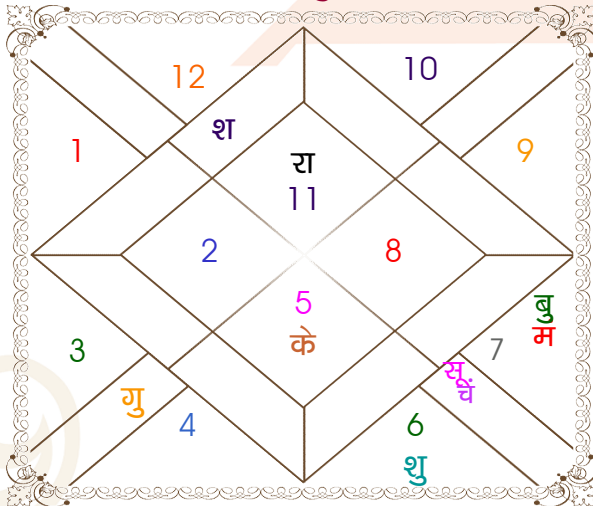
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	मातृ	पितृ	बाल	भीत	प्रकाश	0.33	45 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	बाल	शान्त	प्रकाश	1.80	48 %
मंगल	अमात्य	भातृ	मृत	शान्त	निद्रा	2.93	28 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	मुदित	आगम	5.13	32 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	दीप्त	कौतुक	20.44	73 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	युवा	भीत	आगमन	0.70	64 %
शनि	ज्ञाति	आयु	मृत	शान्त	सभा	0.66	43 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	मुदित	प्रकाश	0.00	21 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	निद्रा	0.00	21 %
कुल						32.00	

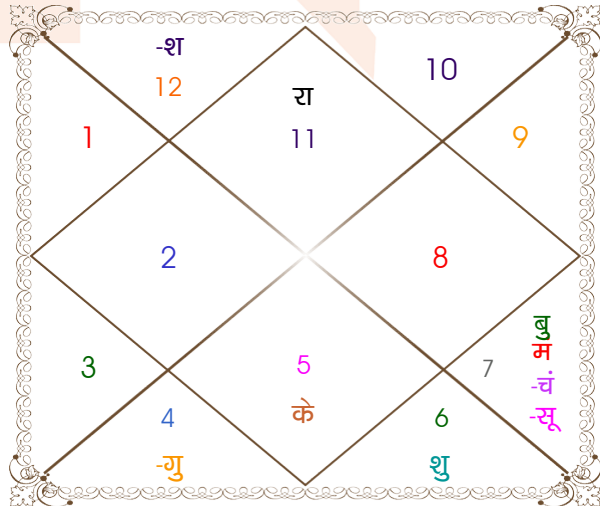
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 11 मास 13 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
21/10/2025	05/10/2027	05/10/2045	05/10/2061	04/10/2080
05/10/2027	05/10/2045	05/10/2061	04/10/2080	05/10/2097
00/00/0000	राहु 17/06/2030	गुरु 23/11/2047	शनि 07/10/2064	बुध 03/03/2083
00/00/0000	गुरु 10/11/2032	शनि 05/06/2050	बुध 18/06/2067	केतु 28/02/2084
00/00/0000	शनि 17/09/2035	बुध 10/09/2052	केतु 26/07/2068	शुक्र 29/12/2086
00/00/0000	बुध 05/04/2038	केतु 17/08/2053	शुक्र 26/09/2071	सूर्य 05/11/2087
00/00/0000	केतु 24/04/2039	शुक्र 17/04/2056	सूर्य 07/09/2072	चंद्र 05/04/2089
21/10/2025	शुक्र 24/04/2042	सूर्य 03/02/2057	चंद्र 08/04/2074	मंगल 02/04/2090
शुक्र 29/10/2026	सूर्य 18/03/2043	चंद्र 05/06/2058	मंगल 18/05/2075	राहु 20/10/2092
सूर्य 06/03/2027	चंद्र 16/09/2044	मंगल 12/05/2059	राहु 24/03/2078	गुरु 26/01/2095
चंद्र 05/10/2027	मंगल 05/10/2045	राहु 05/10/2061	गुरु 04/10/2080	शनि 05/10/2097

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
05/10/2097	05/10/2104	05/10/2124	06/10/2130	05/10/2140
05/10/2104	05/10/2124	06/10/2130	05/10/2140	00/00/0000
केतु 03/03/2098	शुक्र 05/02/2108	सूर्य 23/01/2125	चंद्र 06/08/2131	मंगल 04/03/2141
शुक्र 03/05/2099	सूर्य 04/02/2109	चंद्र 25/07/2125	मंगल 06/03/2132	राहु 22/03/2142
सूर्य 08/09/2099	चंद्र 06/10/2110	मंगल 29/11/2125	राहु 05/09/2133	गुरु 26/02/2143
चंद्र 09/04/2100	मंगल 06/12/2111	राहु 24/10/2126	गुरु 05/01/2135	शनि 06/04/2144
मंगल 05/09/2100	राहु 06/12/2114	गुरु 12/08/2127	शनि 06/08/2136	बुध 03/04/2145
राहु 23/09/2101	गुरु 06/08/2117	शनि 24/07/2128	बुध 05/01/2138	केतु 30/08/2145
गुरु 30/08/2102	शनि 05/10/2120	बुध 31/05/2129	केतु 06/08/2138	शुक्र 22/10/2145
शनि 09/10/2103	बुध 06/08/2123	केतु 06/10/2129	शुक्र 06/04/2140	00/00/0000
बुध 05/10/2104	केतु 05/10/2124	शुक्र 06/10/2130	सूर्य 05/10/2140	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 1 वर्ष 11 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र 21/10/2025 29/10/2026	मंगल - सूर्य 29/10/2026 06/03/2027	मंगल - चंद्र 06/03/2027 05/10/2027	राहु - राहु 05/10/2027 17/06/2030	राहु - गुरु 17/06/2030 10/11/2032
शुक्र 08/11/2025 सूर्य 29/11/2025 चंद्र 04/01/2026 मंगल 29/01/2026 राहु 03/04/2026 गुरु 30/05/2026 शनि 05/08/2026 बुध 04/10/2026 केतु 29/10/2026	सूर्य 05/11/2026 चंद्र 15/11/2026 मंगल 23/11/2026 राहु 12/12/2026 गुरु 29/12/2026 शनि 18/01/2027 बुध 05/02/2027 केतु 13/02/2027 शुक्र 06/03/2027	चंद्र 24/03/2027 मंगल 05/04/2027 राहु 07/05/2027 गुरु 05/06/2027 शनि 08/07/2027 बुध 08/08/2027 केतु 20/08/2027 शुक्र 24/09/2027 सूर्य 05/10/2027	राहु 01/03/2028 गुरु 11/07/2028 शनि 14/12/2028 बुध 02/05/2029 केतु 29/06/2029 शुक्र 10/12/2029 सूर्य 29/01/2030 चंद्र 21/04/2030 मंगल 17/06/2030	गुरु 12/10/2030 शनि 28/02/2031 बुध 02/07/2031 केतु 22/08/2031 शुक्र 15/01/2032 सूर्य 28/02/2032 चंद्र 11/05/2032 मंगल 01/07/2032 राहु 10/11/2032
राहु - शनि 10/11/2032 17/09/2035	राहु - बुध 17/09/2035 05/04/2038	राहु - केतु 05/04/2038 24/04/2039	राहु - शुक्र 24/04/2039 24/04/2042	राहु - सूर्य 24/04/2042 18/03/2043
शनि 24/04/2033 बुध 18/09/2033 केतु 18/11/2033 शुक्र 10/05/2034 सूर्य 01/07/2034 चंद्र 26/09/2034 मंगल 26/11/2034 राहु 01/05/2035 गुरु 17/09/2035	बुध 27/01/2036 केतु 21/03/2036 शुक्र 23/08/2036 सूर्य 09/10/2036 चंद्र 26/12/2036 मंगल 18/02/2037 राहु 08/07/2037 गुरु 09/11/2037 शनि 05/04/2038	केतु 28/04/2038 शुक्र 01/07/2038 सूर्य 20/07/2038 चंद्र 21/08/2038 मंगल 12/09/2038 राहु 09/11/2038 गुरु 30/12/2038 शनि 28/02/2039 बुध 24/04/2039	शुक्र 23/10/2039 सूर्य 17/12/2039 चंद्र 17/03/2040 मंगल 20/05/2040 राहु 01/11/2040 गुरु 27/03/2041 शनि 16/09/2041 बुध 19/02/2042 केतु 24/04/2042	सूर्य 10/05/2042 चंद्र 06/06/2042 मंगल 26/06/2042 राहु 14/08/2042 गुरु 27/09/2042 शनि 18/11/2042 बुध 03/01/2043 केतु 22/01/2043 शुक्र 18/03/2043
राहु - चंद्र 18/03/2043 16/09/2044	राहु - मंगल 16/09/2044 05/10/2045	गुरु - गुरु 05/10/2045 23/11/2047	गुरु - शनि 23/11/2047 05/06/2050	गुरु - बुध 05/06/2050 10/09/2052
चंद्र 03/05/2043 मंगल 04/06/2043 राहु 25/08/2043 गुरु 06/11/2043 शनि 01/02/2044 बुध 18/04/2044 केतु 20/05/2044 शुक्र 20/08/2044 सूर्य 16/09/2044	मंगल 08/10/2044 राहु 05/12/2044 गुरु 25/01/2045 शनि 27/03/2045 बुध 20/05/2045 केतु 12/06/2045 शुक्र 15/08/2045 सूर्य 03/09/2045 चंद्र 05/10/2045	गुरु 17/01/2046 शनि 20/05/2046 बुध 07/09/2046 केतु 23/10/2046 शुक्र 02/03/2047 सूर्य 10/04/2047 चंद्र 14/06/2047 मंगल 29/07/2047 राहु 23/11/2047	शनि 17/04/2048 बुध 26/08/2048 केतु 19/10/2048 शुक्र 23/03/2049 सूर्य 08/05/2049 चंद्र 24/07/2049 मंगल 16/09/2049 राहु 02/02/2050 गुरु 05/06/2050	बुध 30/09/2050 केतु 18/11/2050 शुक्र 05/04/2051 सूर्य 16/05/2051 चंद्र 24/07/2051 मंगल 10/09/2051 राहु 13/01/2052 गुरु 02/05/2052 शनि 10/09/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल
10/09/2052	17/08/2053	17/04/2056	03/02/2057	05/06/2058
17/08/2053	17/04/2056	03/02/2057	05/06/2058	12/05/2059
केतु 30/09/2052	शुक्र 26/01/2054	सूर्य 02/05/2056	चंद्र 16/03/2057	मंगल 25/06/2058
शुक्र 26/11/2052	सूर्य 16/03/2054	चंद्र 26/05/2056	मंगल 13/04/2057	राहु 15/08/2058
सूर्य 13/12/2052	चंद्र 05/06/2054	मंगल 12/06/2056	राहु 25/06/2057	गुरु 30/09/2058
चंद्र 10/01/2053	मंगल 01/08/2054	राहु 26/07/2056	गुरु 29/08/2057	शनि 23/11/2058
मंगल 30/01/2053	राहु 25/12/2054	गुरु 03/09/2056	शनि 14/11/2057	बुध 10/01/2059
राहु 22/03/2053	गुरु 04/05/2055	शनि 19/10/2056	बुध 22/01/2058	केतु 30/01/2059
गुरु 07/05/2053	शनि 05/10/2055	बुध 29/11/2056	केतु 20/02/2058	शुक्र 28/03/2059
शनि 30/06/2053	बुध 20/02/2056	केतु 16/12/2056	शुक्र 12/05/2058	सूर्य 14/04/2059
बुध 17/08/2053	केतु 17/04/2056	शुक्र 03/02/2057	सूर्य 05/06/2058	चंद्र 12/05/2059
गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध	शनि - केतु	शनि - शुक्र
12/05/2059	05/10/2061	07/10/2064	18/06/2067	26/07/2068
05/10/2061	07/10/2064	18/06/2067	26/07/2068	26/09/2071
राहु 21/09/2059	शनि 28/03/2062	बुध 24/02/2065	केतु 11/07/2067	शुक्र 04/02/2069
गुरु 15/01/2060	बुध 30/08/2062	केतु 22/04/2065	शुक्र 17/09/2067	सूर्य 03/04/2069
शनि 02/06/2060	केतु 02/11/2062	शुक्र 03/10/2065	सूर्य 07/10/2067	चंद्र 08/07/2069
बुध 04/10/2060	शुक्र 05/05/2063	सूर्य 21/11/2065	चंद्र 10/11/2067	मंगल 14/09/2069
केतु 25/11/2060	सूर्य 28/06/2063	चंद्र 11/02/2066	मंगल 03/12/2067	राहु 06/03/2070
शुक्र 20/04/2061	चंद्र 28/09/2063	मंगल 09/04/2066	राहु 02/02/2068	गुरु 08/08/2070
सूर्य 02/06/2061	मंगल 01/12/2063	राहु 04/09/2066	गुरु 27/03/2068	शनि 07/02/2071
चंद्र 15/08/2061	राहु 14/05/2064	गुरु 13/01/2067	शनि 30/05/2068	बुध 21/07/2071
मंगल 05/10/2061	गुरु 07/10/2064	शनि 18/06/2067	बुध 26/07/2068	केतु 26/09/2071
शनि - सूर्य	शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - राहु	शनि - गुरु
26/09/2071	07/09/2072	08/04/2074	18/05/2075	24/03/2078
07/09/2072	08/04/2074	18/05/2075	24/03/2078	04/10/2080
सूर्य 13/10/2071	चंद्र 25/10/2072	मंगल 02/05/2074	राहु 21/10/2075	गुरु 25/07/2078
चंद्र 11/11/2071	मंगल 28/11/2072	राहु 02/07/2074	गुरु 08/03/2076	शनि 19/12/2078
मंगल 02/12/2071	राहु 23/02/2073	गुरु 25/08/2074	शनि 20/08/2076	बुध 29/04/2079
राहु 23/01/2072	गुरु 11/05/2073	शनि 28/10/2074	बुध 14/01/2077	केतु 22/06/2079
गुरु 09/03/2072	शनि 10/08/2073	बुध 24/12/2074	केतु 16/03/2077	शुक्र 23/11/2079
शनि 03/05/2072	बुध 31/10/2073	केतु 17/01/2075	शुक्र 06/09/2077	सूर्य 09/01/2080
बुध 21/06/2072	केतु 04/12/2073	शुक्र 25/03/2075	सूर्य 28/10/2077	चंद्र 26/03/2080
केतु 11/07/2072	शुक्र 10/03/2074	सूर्य 14/04/2075	चंद्र 22/01/2078	मंगल 19/05/2080
शुक्र 07/09/2072	सूर्य 08/04/2074	चंद्र 18/05/2075	मंगल 24/03/2078	राहु 04/10/2080

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

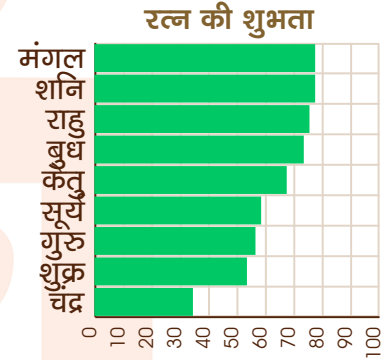
मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	77%	भाग्योदय, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	77%	धन, कम खर्च, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	75%	स्वास्थ्य, धन
पन्ना	बुध	73%	भाग्योदय, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
लहसुनिया	केतु	67%	दम्पति, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	58%	भाग्योदय, दम्पति
पुखराज	गुरु	56%	शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	53%	दुर्घटना से बचाव, सुख, भाग्योदय
मोती	चंद्र	34%	नेष्ट भाग्य, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	05/10/2027	64%	47%	89%	61%	62%	53%	77%	62%	73%
राहु	05/10/2045	41%	9%	64%	73%	56%	59%	83%	88%	55%
गुरु	05/10/2061	64%	47%	83%	61%	69%	31%	77%	75%	67%
शनि	04/10/2080	41%	9%	64%	80%	56%	59%	89%	81%	55%
बुध	05/10/2097	64%	9%	77%	86%	56%	59%	77%	75%	67%
केतु	05/10/2104	41%	9%	83%	73%	56%	59%	64%	62%	80%
शुक्र	05/10/2124	41%	9%	77%	80%	56%	66%	83%	81%	73%
सूर्य	06/10/2130	70%	47%	83%	73%	62%	31%	64%	62%	55%
चंद्र	05/10/2140	64%	55%	77%	80%	56%	53%	77%	62%	55%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी

बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते हैं। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पत्ति की वृद्धि करेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न

नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी शनि दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न

धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना आपको धर्मात्मा और भाग्यशाली बनाएगा। रत्न की शुभता से आप सदाचारी, धर्म को जानने वाले और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको अपने धर्म भाव पर अडिग रखेगा। पन्ना रत्न तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों जैसे यज्ञ आदि में आपकी अच्छी रुचि बनाएगा। बुद्धि प्रयोग से आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। यह रत्न ज्ञान, धन और यश से उज्वल बनाएगा। बुध रत्न पन्ना आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। यह रत्न आपको वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुण दे सकता है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृ तज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते हैं।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते हैं। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूठी, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का

धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को अच्छा रख, आपको निरोगी बनायेगा। आप मधुरभाषी और सदाचारी बनेंगे। रत्न धारण से आप पराक्रमी, विवेकवान और उदार बनेंगे। एवं रत्न शुभता से आप अच्छे कर्म करने वाले, लोकमान्य और प्रतापी बनेंगे। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शत्रुहंता और अजात शत्रु होंगे। यह रत्न आपको वाद-विवाद में भी विजयी करेगा। पुखराज शुभता से भाई-बहनों और मामा सुख मिलेगा। रत्न प्रभाव से आपको अच्छे नौकर चाकर मिलेंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते हैं। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बड़ी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखरी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखरी रुद्राक्ष धारण करें।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा

ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आप की भाग्योन्नति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। रत्न प्रभाव आपकी लोकप्रियता, धार्मिकता एवं सरकारी सम्मान में कमी कर सकता है। रत्न धारण आपको कर्म की अपेक्षा भाग्यवादिता की ओर उन्मुख कर सकता है। विदेश यात्राओं में धन हानि दे सकता है। जीवन काल में आपके द्वारा अर्जित संपत्ति में भी कमी आ सकती है। मोती रत्न प्रभाव से आपके स्वभाव की चंचलता में वृद्धि हो सकती है। दया, सेवा आदि कार्यों में आपकी रुचि कम हो सकती है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छटे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते हैं। रत्न धारण से आपको

ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

मंगल

(21/10/2025 - 05/10/2027)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज, गोमेद, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(05/10/2027 - 05/10/2045)

राहु की दशा में आपका गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, मूंगा, हीरा, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(05/10/2045 - 05/10/2061)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(05/10/2061 - 04/10/2080)

शनि की दशा में आपका नीलम, गोमेद व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(04/10/2080 - 05/10/2097)

बुध की दशा में आपका पन्ना, मूंगा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य, हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(05/10/2097 - 05/10/2104)

केतु की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, नीलम, गोमेद, हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(05/10/2104 - 05/10/2124)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, गोमेद, पन्ना व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(05/10/2124 - 06/10/2130)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, माणिक्य, नीलम, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(06/10/2130 - 05/10/2140)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद, पुखराज, मोती, लहसुनिया व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये ऐमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता है। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई में जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता है। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते हैं, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता है। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता है। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता है।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	30/08/2068-04/11/2070 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100 16/09/2100-03/12/2102 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/12/2102-29/11/2105 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2108-29/07/2108 23/11/2108-17/02/2111 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
अशुभ
शुभ
सम
सम

क्षेत्र

सुख
दुर्घटना से बचाव
भाग्योदय
व्यावसायिक परेशानी
कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती हैं परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पत्ति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे ।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम् भाव में स्थित है।
- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या

पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

कन्या राशि में शुक हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचल होते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये स्वभाव से प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही स्वीकार करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है तथा धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है तथा आधुनिकता से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ साथ ये उत्तम श्रेणी के वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा इनके हृदय में मानव जाति के प्रति किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहता है। अध्ययन के प्रति ये रुचिशील रहते हैं तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल ये नेतृत्व को प्राप्त करने में भी समर्थ हो जाते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा अपने महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धि के द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके आनंद पूर्वक इसका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही होगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपकी दृष्टि सूक्ष्म होगी अतः अन्य जनों को प्रभावित करके आप उनके विषय में पूर्ण ज्ञान अर्जित करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। लेखन कार्य में आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप किसी विशिष्ट उपलब्धि को अर्जित करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप सामान्यतया कम बोलना पसंद करेंगे तथा कम से कम शब्दों में वाणी द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति करेंगे।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके आयस्रोतों की संख्या एक से अधिक हो सकती है। साथ ही ऐश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा भौतिक उपकरणों को अर्जित करके सपरिवार सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इससे आपके सामाजिक स्तर में वृद्धि होगी तथा एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपका सम्मान रहेगा।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य कलापों एवं अनुष्ठानों को सम्पन्न करने में उपेक्षा का भाव रखेंगे। लेकिन बन्धु एवं मित्र वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप पराक्रमी बुद्धिमान एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा आनंद पूर्वक सुखोपभोग करते हुए

अपना जीवन व्यतीत करेंगे ।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृत्ति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभावित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उद्देश्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्टियों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पत्ति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आवश्यक सांसारिक सुखों से युक्त होंगे तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सम्पन्न होंगे एवं जीवन में उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्धिशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी स्तर उन्नत होगा।

सामान्यतया जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपके नाम हो सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य में अभि वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा परंतु विवाद युक्त सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सामान्यतया अच्छा होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप नित्य तत्पर होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सज्जन होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख की प्राप्ति होगी तथा युवावस्था से ही आप वाहन का उपयोग करना प्रारंभ करेंगे जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी पारिवारिक जनों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः सभी सदस्य उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों एक दूसरे के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे तथा सुख-दुःख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु परस्पर मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि आप परस्पर सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है। साथ ही माता से आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति भी होती रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको परिश्रम करना पड़ेगा तभी वांछित सफलताएं मिल सकती हैं। स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में भी आत्मविश्वास एवं परिश्रम के भाव का प्रदर्शन करना पड़ेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपके आसानी से सफलता मिलेगी तथा अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी जिससे आप अवसरानुकूल वांछित लाभ एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से शीघ्र एवं सुगमता से सम्पन्न करेंगे फलतः अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे तथा आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मिथुन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा आपका प्रेम भावनात्मक आकर्षण से युक्त होगा। इस क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी यत्नपूर्वक पालन करेंगे एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका दाम्पत्य जवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर पुत्र एवं कन्या दोनों की प्राप्ति होगी आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में समान्यतया तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द एवं स्वतन्त्र होगी। अतः यदा-कदा वे बिना माता-पिता की सलाह से भी कोई कार्य सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूरी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा प्रारंभ से ही वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे जिससे वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में नित्य योग्य सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त वे विनम्र सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य-कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान में भी वृद्धि होगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है। केतु के प्रभाव से वह उग्र सांसारिक कार्यों में दक्ष एवं कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। लेकिन सांसारिक कार्य कलापों में वह दक्ष होंगी तथा साहस एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगी। केतु के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा एवं परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी पत्नी लालिमा लिए सुंदर एवं गौर वर्ण की महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा शारीरिक संरचना उनकी पतली रहेगी परन्तु अन्य शरीर के अंगों में पुष्टता एवं सुडौलता बनी रहेगी इससे उनके सौन्दर्य में निखार आएगा एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक बनेगा। साहित्य एवं कला में भी रुचि होगी तथा पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति लगाव होगा। भौतिकता के प्रति भी उनकी रुचि रहेगी तथा सांसारिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध आएंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा या प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण रहेगा साथ ही एक दूसरे की मनोभावों की भी कद्र करेंगे लेकिन पत्नी की उग्र प्रवृत्ति से यदा कदा आप अनावश्यक समस्याओं का सामना करेंगे। अतः ऐसे समय में संयम एवं धैर्य पूर्वक कार्य लेना चाहिए तभी अनुकूलता आ सकती है।

आपका विवाह किसी सामान्य परिवार में होगा तथा उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति मध्यम होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आप मधुर संबंध स्थापित करने के लिए यत्नशील होंगे तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे एवं नैतिक सहयोग भी मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की विशेष सेवा भावना नहीं होगी तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान नहीं रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्र स्वभाव एवं वाणी से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार से सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। अतः जीवन में साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपकी जन्म कुंडली में जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। वृश्चिक राशि जलतत्व युक्त राशि है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी साथ ही कार्यक्षेत्र में आप समय समय पर परिवर्तन करने के भी इच्छुक रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा जिससे आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, होटल प्रबंधक, या कर्मचारी, पुलिस सी आई डी, सेना, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, शस्त्र निर्माता तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार सुवर्ण आदि धातु कार्य विद्युत उपकरणों का क्रय विक्रय या निर्माण औषधि क्रय विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक पदार्थ या होटल का स्वामित्व से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा इस में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता के लिए उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य वे आदरणीय होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चस्तर पर शिक्षा का यत्नपूर्वक प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता रहेगी। आप में आज्ञाकारिता का भाव भी विद्यमान होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ, खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी और दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें। अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डाल जा सकते हैं। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थानपर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योंकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता है उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग

मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- मंगल
(21/10/2025 - 05/10/2027)**

मंगल की महादशा 21/10/2025 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 05/10/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सृष्ट होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता

से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(21/10/2025 - 29/10/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 21/10/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 21/10/2025 को प्रारंभ होकर 29/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप हर प्रकार से समृद्ध बनेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में धन या अचल संपत्ति प्राप्त हो सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। व्यापार में आय बढ़ेगी। सम्मान में वृद्धि होगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। परिवार में खुशहाली रहेगी। विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। दान-धर्म में रुचि लेंगे। परिवाजन और मित्र इज्जत करेंगे।

आपके जीवनसाथी विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता सौभाग्यशाली रहेंगी, प्रसिद्ध और धनी बनेंगी, मित्र उनकी मदद करेंगे। भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रु परास्त होंगे, कार्यालय उत्तम रहेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(29/10/2026 - 06/03/2027)**

आपकी मंगल की महादशा 21/10/2025 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 29/10/2026 को प्रारंभ होकर 06/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपका भाग्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्राएं संभव हैं। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। ज्योतिषियों और दार्शनिकों के लिए समय शुभ है। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, सुविधाएं उत्तम

**महादशा :- राहु
(05/10/2027 - 05/10/2045)**

राहु की महादशा 05/10/2027 को आरम्भ और 05/10/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :



इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपकी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(05/10/2027 - 17/06/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2027 को प्रारंभ होकर 05/10/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 05/10/2027 को प्रारंभ होकर 17/06/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। लग्न में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के सप्तम भाग पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बिना उद्देश्य के इधर-उधर भटक सकते हैं। मित्र और रिश्तेदार आपसे दूर हो सकते हैं क्योंकि आपका व्यवहार शत्रुतापूर्ण हो सकता है। आप स्वार्थी, शक्की, विद्रोही और निम्न कोटि के कर्म करने वाले हो सकते हैं। आपको नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए; अपने बल पर कार्य करना चाहिए। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, इसके लिए अपरंपरागत उपचार का सहारा ले सकते हैं। विवाह जीवन में तनाव आ सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(17/06/2030 - 10/11/2032)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 05/10/2027 को प्रारंभ होकर 05/10/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 17/06/2030 को प्रारंभ होकर 10/11/2032 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाग में स्थित है। छठे भाग बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाग में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भागों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ साबित हो सकती है। आप आलसी, भाग्यहीन और डरपोक हो सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर आप कुछ बेचैन रहेंगे। प्रत्येक व्यक्ति के साथ आवश्यकता से अधिक सावधानी से व्यवहार करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से

धोकर तर्जनी में धारण करें।

